श्वेतक्रांति 2.0 : डेयरी क्षेत्र का सतत विकास मॉडल

डॉ. मीनेश सी. शाह

श्वेतक्रांति 2.0 की शुरुआत दुग्ध आपूर्ति श्रृंखला में असंगठित क्षेत्र की व्यापकता से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए की गई है। इसका उद्देश्य दुग्ध सहकारिताओं की शक्ति का लाभ उठाना, उत्पादकता में सुधार करना, किसानों को उचित मूल्य सुनिश्चित करना, टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाना और तकनीकी प्रगति को शामिल करना है। यह एक दूरदर्शी और प्रभावशाली पहल है, जो दुग्ध क्षेत्र में व्यापक सुधारों का मार्ग प्रशस्त करती है।

देश के पहले सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के सक्षम नेतृत्व और मार्गदर्शन में, सहकारिता मंत्रालय ने श्वेतक्रांति 2.0 की शुरुआत की है। इस पहल के अंतर्गत 1,000 बहूद्देशीय प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (MPACS) और बहूद्देशीय डेयरी सहकारी समितियों (MDCS) को डेयरी गतिविधियों की शुरुआत हेतु प्रत्येक को 40,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। यह सहायता *राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड* (NDDB) के संसाधनों से दी जा रही है। आगे चलकर यह पहल पशुपालन एवं डेयरी विभाग, भारत सरकार के प्रस्तावित *राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम* 2.0 (NPDD 2.0) के अंतर्गत वित्तीय सहायता द्वारा संचालित की जाएगी। इस पहल से सहकारी आंदोलन को और मज़बूती मिलेगी।

भारत का डेयरी क्षेत्र देश की कृषि अर्थव्यवस्था में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। ये हमारी कृषि अर्थव्यवस्था का अभिन्न

लेखक राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक हैं।

अंग है। पशुधन कृषि का सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र है, जो राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 5.5% का योगदान करता है। डेयरी क्षेत्र सीधे तौर पर लगभग 8 करोड़ किसानों को रोज़गार प्रदान करता है, जिससे यह ग्रामीण रोज़गार और गरीबी उन्मूलन का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनता है। भारत न केवल दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है (वैश्विक उत्पादन का लगभग 25% हिस्सा), बल्कि दुग्ध और दुग्ध उत्पादों का सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है। भारत में वर्ष 2014-15 में दूध उत्पादन 146.3 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) था जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 239.3 MMT तक पहुँच गया है, जो कि वार्षिक लगभग 6% की वृद्धि दर को दर्शाता है। इसकी तुलना में दूध उत्पादन की वैश्विक वृद्धि दर मात्र 2% प्रति वर्ष है।

भारत में प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 471 ग्राम प्रतिदिन है, जो कि वैश्विक औसत 315 ग्राम प्रतिदिन से कहीं अधिक है। यह तथ्य भारतीय आहार में दूध की महत्ता को दर्शाता है। इस प्रकार, डेयरी क्षेत्र विशाल देश की बड़ी आबादी, जिसमें शाकाहारी और लैक्टो-शाकाहारी की संख्या अधिक है, को 'खाद्य सुरक्षा' और 'पोषण' उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

श्वेतक्रांति 2.0 की आवश्यकता

श्वेतक्रांति 2.0 की आवश्यकता उस समय महसूस की जा रही है जब भारत का डेयरी क्षेत्र तेज़ी से बदलते परिदृश्य का सामना कर रहा है। वर्तमान में यह उद्योग अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, जिनमें शामिल हैं– दुग्ध पशुओं की कम उत्पादकता, संगठित क्षेत्र की सीमित भागीदारी (देश के केवल एक-तिहाई गांवों तक ही सहकारी समितियों की पहुँच), दुग्ध उत्पादों में मूल्यवर्धित उत्पादों की कम हिस्सेदारी, वैश्विक दुग्ध व्यापार में भारत की नगण्य भागीदारी, और जलवायु एवं सततता से जुड़ी समस्याएं।

सबसे बड़ी चिंता का विषय प्रति पशु दूध उत्पादन की कम दर है। भारत में गाय और भैंस से औसतन 6 किलोग्राम प्रति दिन दूध प्राप्त होता है, जबकि अमेरिका और यूरोप जैसे उन्नत डेयरी क्षेत्रों में यह 18 से 20 किलोग्राम प्रतिदिन तक होता है। उत्पादकता में यह अंतर उद्योग की वृद्धि और लाभप्रदता को सीमित करता है और घरेलू मांग को पूरा करने की क्षमता को भी प्रभावित करता है।

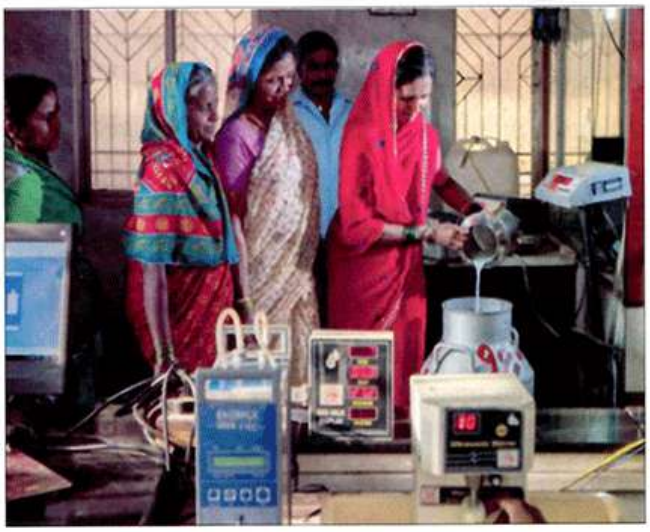

पर्यावरणीय चुनौतियां भी अब इस क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं। डेयरी फार्मिंग से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन और जल उपयोग बढ़ रहा है, जिससे इस उद्योग की दीर्घकालिक पर्यावरणीय स्थिरता पर सवाल उठ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण फसल उत्पादन और चारे की गुणवत्ता पर असर पड़ रहा है, ऐसे में इस क्षेत्र को कम कार्बन उत्सर्जन और कम जल खपत वाली सतत खेती विधियों को अपनाना आवश्यक हो गया है।

आपूर्ति श्रृंखला में अक्षमता और असंगठित बाज़ार ढाँचा भी इस उद्योग के सामने प्रमुख समस्याएं हैं। आज भी भारत में लगभग 68% दूध अधिशेष असंगठित क्षेत्र के माध्यम से विपणन किया जाता है, जहाँ गुणवत्ता नियंत्रण, कुशल लॉजिस्टिक्स और किसानों की सौदेबाज़ी क्षमता का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त, दूध में मिलावट और एंटीबायोटिक अवशेषों की मौजूदगी ने 'खाद्य सुरक्षा' और 'उपभोक्ता विश्वास' को लेकर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए हैं।

अनुसरण क्षमता (ट्रेसबिलिटी), गुणवत्ता मानकों और स्वच्छता प्रथाओं की कमी के कारण यह असंगठित क्षेत्र न तो घरेलू और न ही अंतरराष्ट्रीय माँग को ठीक से पूरा कर पा रहा है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक होने के बावजूद वैश्विक दुग्ध व्यापार में केवल 1% से भी कम हिस्सेदारी रखता है, जो कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा, उत्पाद गुणवत्ता और प्रसंस्करण अवसंरचना में सुधार की आवश्यकता को दर्शाता है।

भारत के डेयरी क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे दूध उत्पादन, पशुपालन, और सहकारी समितियों के संचालन में प्रमुख योगदान देती हैं। ग्रामीण भारत में महिलाएं 60-80% डेयरी कार्यों जैसे- दूध दुहना, पशुओं को खिलाना, देखभाल और स्वास्थ्य संबंधी कार्य करती हैं। कुल डेयरी कार्यबल का लगभग 70% महिलाएं हैं, फिर भी असंगठित और अनौपचारिक कार्यप्रणाली के कारण उनके योगदान को अक्सर कम करके आंका जाता है।

महिला नेतृत्व वाली डेयरी सहकारी समितियां ग्रामीण सशक्तीकरण का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी हैं। अमूल, *राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड* तथा विभिन्न राज्य-स्तरीय डेयरी महासंघों ने महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने की शक्ति और कौशल विकास के अवसर प्राप्त हुए हैं, जिससे वे पारंपरिक भूमिकाओं से आगे

डेयरी सहकारिता नेटवर्क में विभिन्न हितधारकों द्वारा निभायी जाने वाली भूमिका की संक्षिप्त झलक

बढ़कर नेतृत्व की भूमिका में आ सकी हैं।

परिवर्तन की दिशा में एक व्यापक पहल इस समय केवल दूध उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य सततता सुनिश्चित करना, गुणवत्ता में सुधार लाना, ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना, प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, और भारत को वैश्विक दुग्ध बाजार में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करना भी है। सहकारिता मंत्रालय मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय के सहयोग से *श्वेतक्रांति 2.0* की शुरुआत के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान करने और एक सहकारिता-आधारित, अधिक लचीले, न्यायसंगत और टिकाऊ दुग्ध क्षेत्र की आधारशिला रखने के लिए प्रतिबद्ध है। *श्वेतक्रांति 2.0* का उद्देश्य है–दूध आपूर्ति शृंखला में असंगठित क्षेत्र की बड़ी भूमिका की चुनौती को डेयरी सहकारिताओं की शक्ति के माध्यम से दूर करना, उत्पादकता में सुधार लाना, किसानों को उचित मूल्य दिलाना, सतत खेती को अपनाना, और तकनीकी नवाचारों को शामिल करना। यह पहल एक मजबूत, प्रतिस्पर्धी और समावेशी दुग्ध क्षेत्र के निर्माण की दिशा में कार्य कर रही है।

भारत के पास डेयरी क्षेत्र में, विशेष रूप से संगठित क्षेत्र

श्वेतक्रांति 2.0 के तहत वर्षवार प्रस्तावित लक्ष्य

प्रमुख मापदंड	आधार वर्ष 2023-24	2024-25	2025-26	2026-27	2027-28	2028-29
सहकारी दूध संग्रहण (लाख किलोग्राम प्रतिदिन)	660	720	780	847	923	1007

में, अपार संभावनाएं हैं जहाँ दक्षता बढ़ाने, उत्पादकता सुधारने और निर्यात प्रतिस्पर्धा को मज़बूत करने के अनेक अवसर मौजूद हैं। *श्वेतक्रांति 2.0*, इन संभावनाओं को साकार करने के लिए एक रोडमैप प्रदान करती है, जो स्थिरता और वैश्विक बाज़ार में विकास को सुनिश्चित करेगा।

श्वेतक्रांति 2.0 प्रौद्योगिकी, ऋण, प्रशिक्षण और नेतृत्व के अवसरों तक बेहतर पहुँच प्रदान करके महिलाओं को सशक्त बनाने पर विशेष ध्यान केंद्रित करती है। *श्वेतक्रांति 2.0* के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि महिलाएं डेयरी सहकारिताओं में सक्रिय भागीदारी करें, जिससे लैंगिक समानता, आर्थिक सशक्तीकरण और समावेशी डेयरी क्षेत्र को बढ़ावा मिल सके।

श्वेतक्रांति 2.0 की पूर्वपीठिका

राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) प्रारंभ में अपने संसाधनों से 1,000 बहूद्देशीय प्राथमिक कृषि ऋण अथवा दुग्ध सहकारी समितियों (MPACS/MDCS) में प्रत्येक को 40,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करेगा ताकि वे डेयरी गतिविधियां आरंभ कर सकें। इसके पश्चात, *श्वेतक्रांति 2.0* के अंतर्गत प्रस्तावित गतिविधियों का वित्तपोषण पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार के *राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम 2.0* (NPDD 2.0) के अंतर्गत किया जाएगा। यह कार्यक्रम पशुपालन और डेयरी विभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार लागू किया जाएगा।

श्वेतक्रांति 2.0 के उद्देश्य

श्वेतक्रांति 2.0 का उद्देश्य भारत के डेयरी क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी, सतत और समावेशी बनाए रखना है। इस पहल के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **दूध संग्रहण में वृद्धि:** डेयरी सहकारिताओं द्वारा दूध संग्रहण में 2028-29 तक 50% की वृद्धि का लक्ष्य है, जिससे अधिक दूध संगठित क्षेत्र में आएगा और दूध संग्रहण एवं वितरण नेटवर्क की दक्षता बढ़ेगी।
- **डेयरी सहकारिताओं को सशक्त बनाना:** मौजूदा डेयरी सहकारिताओं को मज़बूत करना, नई सहकारिताओं का गठन करना और उन्हें आवश्यक बुनियादी ढाँचे एवं संसाधनों से सुसज्जित करना ताकि वे कुशलता से कार्य कर सकें।
- **महिलाओं को सशक्त बनाना:** डेयरी सहकारिताओं में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व की भूमिका को बढ़ावा देना, जिससे लैंगिक समानता और ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण हो।
- **किसानों को उचित मूल्य दिलाना:** बिचौलियों की भूमिका समाप्त कर सहकारिताओं के माध्यम से बाज़ार तक पहुँच में सुधार करके किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य सुनिश्चित करना।

परियोजना की रणनीति और कार्यान्वयन

श्वेतक्रांति 2.0 के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, डेयरी सहकारिताओं को दूध संग्रहण में लगभग 9% की वार्षिक वृद्धि करनी होगी, जबकि वर्तमान में यह दर लगभग 6% है। इस रणनीति के प्रमुख घटक हैं:

- **नई डेयरी सहकारिताओं की स्थापना:** लगभग 75,000 नई डेयरी सहकारी समितियां (DCS), बहुउद्देशीय डेयरी सहकारी समितियां (M-DCS) और बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (M-PACS) ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित की जाएंगी, जिन्हें मौजूदा या नए दूध आपूर्ति मार्गों से जोड़ा जाएगा।
- **मौजूदा सहकारिताओं को सुदृढ़ बनाना:** लगभग 46,000 मौजूदा सहकारी समितियों को स्वचालित दूध संग्रहण इकाइयों, डेटा प्रोसेसिंग उपकरणों, परीक्षण उपकरणों और बल्क मिल्क कूलरों जैसी अधोसंरचना से सुसज्जित कर मज़बूत किया जाएगा।
- **सरकारी योजनाओं का समन्वय:** *राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड*, पशुपालन एवं डेयरी विभाग की विभिन्न योजनाओं के संयोजन हेतु प्रयासों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगा।

पाँच वर्ष के अंत तक दूध संग्रहण 1000 लाख किलोग्राम प्रतिदिन तक पहुँचाने का लक्ष्य है। यह लक्ष्य दोहरी रणनीति के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा:

- डेयरी सहकारिताओं की पहुँच का विस्तार
- डेयरी सहकारिताओं के प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि

श्वेतक्रांति 2.0 के परिणाम

- **किसानों के लिए बाज़ार तक पहुँच:** छोटे डेयरी किसानों को संगठित बाज़ारों तक पहुँच प्राप्त होगी, जिससे उन्हें दूध का उचित और लाभकारी मूल्य मिल सकेगा।
- **सहकारी संस्थाओं का सशक्तीकरण:** प्राथमिक डेयरी

सहकारी नेटवर्क का विस्तार और सुदृढ़ीकरण किया जाएगा, जिससे दूध संग्रहण से लेकर प्रसंस्करण तक संपूर्ण मूल्य शृंखला में सुधार होगा।

- **महिला सशक्तीकरण:** महिलाओं की भागीदारी को प्राथमिकता दी जाएगी, जिससे लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलेगा और वे इस क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका निभा सकेंगी।
- **संगठित क्षेत्र की भागीदारी में वृद्धि:** असंगठित क्षेत्र से संगठित क्षेत्र की ओर संक्रमण से खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और गुणवत्ता नियंत्रण में सुधार होगा, जिससे भारत का डेयरी क्षेत्र अधिक दक्ष और प्रतिस्पर्धी बनेगा।
- **दूध उत्पादन में वृद्धि:** बेहतर प्रथाओं, अवसंरचना और प्रौद्योगिकी के उपयोग से दूध उत्पादन में वृद्धि होगी, जिससे देश की घरेलू मांग और निर्यात क्षमता पूरी की जा सकेगी।

अब तक की प्रगति

भारत सरकार ने *श्वेतक्रांति 2.0* को समर्थन देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। 19 सितंबर, 2024 को गृह एवं सहकारिता मंत्री ने *श्वेतक्रांति 2.0* की एसओपी को लॉन्च किया। 25 दिसंबर, 2024 को गृह एवं सहकारिता मंत्री ने *श्वेतक्रांति 2.0* का शुभारंभ किया, जिसमें लगभग 6,600 नवगठित डेयरी सहकारी समितियों की स्थापना की गई। इस अवसर पर मत्स्य पालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री भी उपस्थित थे। अब तक 28 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 9,568 बहूउद्देशीय डेयरी सहकारी समितियों (M-DCSs) का पंजीकरण किया जा चुका है।

निष्कर्ष

श्वेतक्रांति 2.0 केवल एक आर्थिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह भारत के डेयरी क्षेत्र के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है। प्रमुख चुनौतियों जैसे पशुओं की कम उत्पादकता, पर्यावरणीय स्थिरता, वैश्विक प्रतिस्पर्धा का समाधान प्रस्तुत करते हुए यह कार्यक्रम सहकारिताओं को सशक्त बनाकर, महिलाओं को सशक्त कर, गुणवत्ता मानकों को सुधार कर, और सतत कृषि पद्धतियां अपना कर भारत के डेयरी उद्योग के लिए एक मजबूत भविष्य का रोडमैप प्रदान करता है। किसानों, सहकारी संस्थाओं, सरकारी एजेंसियों और उद्योग हितधारकों के समन्वित प्रयासों से भारत का डेयरी क्षेत्र नई ऊँचाइयों को छू सकता है। *श्वेतक्रांति 2.0* भारत के डेयरी उद्योग की पूर्ण क्षमता को उजागर करने की कुंजी है, जो आने वाले वर्षों में भारत को वैश्विक डेयरी शक्ति बनाने में सहायक सिद्ध होगा। ❑